कलीसिया। अध्याय 24

1	**प्रार्थना**

समूह का अगुवा। परमेश्वर के आत्मा के द्वारा उसके मार्गदर्शन के लिए, उसकी उपस्थिति के लिए, और उसकी आवाज़ सुनने के लिए, ***प्रार्थना*** करें। कलीसिया का निर्माण करने के विषय में दी जाने वाली इस शिक्षा और अपने समूह को परमेश्वर को समर्पित करें।

2	**बाँटना** (20 मिनट) *[शान्त समय]* **2 तीमुथियुस 2-4**

दिए गए बाइबल अनुच्छेद (1 तीमुथिसुय 1 - 4) में से अपने शान्त समय में से आपने जो कुछ सीखा है, उसे ***एक-एक*** करके एक-दूसरे के साथ ***बाँटें*** *(**या** अपने नोट्स में से **पढ़ें**)*।
जो व्यक्ति अपनी बातों को बाँट रहा है, उसे ध्यान से सुनें, उसकी बातों को गम्भीरता से लें और उसे स्वीकार करें। जिन बातों को वह बाँट रहा है उस पर चर्चा न करें। उन बातों को लिख लें।

3	**याद करें** (5 मिनट) *[यूहन्ना में पाए जाने वाले मुख्य पद]* **यूहन्ना में मुख्य पदों का पुनरावलोकन**

यूहन्ना की पुस्तक से अन्तिम पांच स्मरण पदों का दो दो करके समीक्षा करें।
(6) (यूहन्ना 5:24)। मैं तुम से सच सच कहता हूँ जो मेरा वचन सुनकर मेरे भेजनवाले पर विश्वास करता है, अनन्त जीवन उसका है; और उस पर दण्ड की आज्ञा नहीं होती परन्तु वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है।
(7) यूहन्ना 6:37। जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, और जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं कभी न निकालूँगा।
(8) (यूहन्ना 7:38)। जो कोई मुझ पर विश्वास करेगा, जेसा पवित्र शास्त्र में आया है,'उसके हृदय में से जीवन के जल की नदियां बह निकलेगी।
(9) यूहन्ना 1:12 मैं जगत की ज्योति हूँ; जो मेरे पीछे हो लेगा वह अन्धकार में न चलेगा, परन्तु जीवन की ज्योति पाएगा।
(10) यूहन्ना 10:28। और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ। वे कभी नष्ट न होगीं, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन लेगा।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) *[यूहन्ना रचित सुसमाचार]* **यूहन्ना 10:1-42**

परिचय। यूहन्ना 10:1-42 का अध्ययन करने के लिए बाइबल अध्ययन के पाँच कदमों वाले तरीके का इस्तेमाल करें। यूहन्ना 10:1-39 में एक अच्छे चरवाहे के लक्षणों और यीशु मसीह की फरीसियों और चेलों से इस निवेदन का वर्णन किया गया है कि वह ही परमश्वेर का पुत्र है।

कदम 1 .पढ़ें. **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें, आइये एक साथ मिलकर यूहन्ना 10:1-42 तक पढ़ें।
आइये हम में से हर एक जन एक एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें। .

कदम 2. खोजें . **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?
या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लेखा। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ जरूर साझा करें) आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएं कि हमने क्या सीखा है।
(याद रखें: हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेगें)

10:26-29

खोज 1.उद्धार का निश्चय।

(1) हमारे उद्धार का निश्चय यीशु मसीह की शक्ति और प्रतिज्ञाओं पर आधारित होता है।

यूहन्ना 10:27-28 में, यीशु उन लोगों के बारे में बताते हैं जो उसकी भेड़े हैं,"मेरी भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं;मैं उन्हें जानता हूँ और वे मेरे पीछे पीछे चलती है; और मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ। वे कभी नष्ट न होगीं और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन नहीं लेगा।"

यीशु ने उन लोगों के बारें में तीन निश्चय विशेषताओं को बताया जो उसकी भेड़ें थी।

- सच्चा विश्वासी पहले ही अनन्त जीवन का अधिकारी है अर्थात वह जीवन जो नये स्वर्ग और नयी पृथ्वी पर बिताया जाने वाला है। और यह जीवन अनन्त अर्थात कभी खत्म न होने वाला जीवन है!
- सच्चा विश्वासी कभी इस तरह से पीछे नहीं हट सकता कि उसका प्राण नाश हो जाए, अर्थात वे कभी सदा काल के लिए परमेश्वर की उपस्थिति व परमेश्वर के प्रेम से अलग होने के लिए दोषी न ठहरेगें।
- सच्चा विश्वासी को कोई यीशु के हाथों से छीन नहीं सकता, अर्थात कोई भी शक्ति उन्हें यीशु मसीह की शक्तिशाली सुरक्षा और देखभाल से छीन नहीं सकती।

लेकिन सच्चे विश्वासी कौन हैं? यीशु कहते हैं, कि सच्चे विश्वासियों को यीशु जानते हैं; और वे किसी अन्य पद्धति, दर्शनशास्त्र या धर्म को न मानकर यीशु का अनुसरण करेगें। किसी भी मसीही को उद्धार के निमित्त यीशु की प्रतिज्ञाओं पर सन्देह करने की आवश्यकता नहीं है। लेकिन कोई भी जन अपने आप को तब तक मसीह की भेड़ या मसीही नहीं कह सकता जब तक कि वह मसीह की बातें सुनने और मसीह की आज्ञा मानने की अपनी ज़िम्मेदारी को पूरा नहीं करता!

(2) उद्धार का निश्चय इस बात पर आधारित है कि परमेश्वर पिता ने हमें यीशु मसीह को दिया है।

यूहन्ना 10:26 में यीशु यहूदियों से कहता है जो वास्तव में उस पर विश्वास नहीं करते,"तुम इसलिए विश्वास नहीं करते क्योंकि तुम मेरी भेड़ें नहीं हो।" यह आयत बाइबल से दो शिक्षाओं को देती है, पहला ईश्वर द्वारा पहले से नियुक्त कर देना और दूसरा मनुष्य की जिम्मेदारी। इन दोनों शिक्षाओं या सिद्धान्तों को एक समावेशित करना असम्भव है, क्योंकि ये दोनों ही शिक्षाएं बाइबल में समान्तर रूप से सक्रिय हैं।

एक तरफ तो , हर एक व्यक्ति यीशु को स्वीकार करने और उसे स्वीकार न करने का ज़िम्मेदार है। यहूदी समाज यीशु पर विश्वास न करने के पाप के लिए खुद ज़िम्मेदार है। वह कहता है,"परन्तु तुम विश्वास नहीं करते हो(यूहन्ना 10:26)!" यह एक मानवीय ज़िम्मेदारी है! जब हम सुसमाचार प्रचार करते हैं, हम संसार के सारे लोगों को मनुष्य की ज़िम्मेदारियों से अवगत कराते हैं। इस संसार में जीवन व्यतीत करने वाले सभी लोगों की यह ज़िम्मेदारी है कि वे पश्चाताप और विश्वास करें।(मरकुस 1:15)

दूसरी तरफ, स्वयं परमेश्वर पिता इस बात का चुनाव करते हैं कि वह किस को यीशु मसीह के हाथों में सौंपते हैं और किसको नहीं। यीशु ने कहा,"मेरा पिता, जिसने उन्हें (भेड़ों के झुण्ड को)मुझ को दिया है सबसे बड़ा है (धरती पर पाये जाने वाले सभी जीवों में सर्वोत्तम)और कोई उन्हें (भेड़ों को)पिता के हाथ से छीन नहीं सकता"(यूहन्ना 10:29)। यीशु इस सच्चाई

की शिक्षा यूहन्ना 6:37,44 और 65 में भी देते हैं," जो कुछ पिता मुझे देता है वह सब मेरे पास आएगा, और जो कोई मेरे पास आएगा उसे मैं कभी न निकालूँगा.....कोई मेरे पास नहीं आ सकता जब तक पिता जिसने मुझे भेजा है, उसे खींच न ले... ...इसीलिए मैं ने तुम से कहा था कि जब तक किसी को पिता की ओर से यह वरदान न दिया जाए तब तक वह मेरे पास नहीं आ सकता।" केवल वही लोग जिन्हें स्वयं परमेश्वर पिता यीशु के पास भेजेगा, यीशु के पास आएंगे और उस पर विश्वास करेगें। यह ईश्वरीय पूर्व नियुक्ती है। हमें पूर्व नियुक्ती के बारे में केवल कलीसिया के विश्वासियों को सिखाना चाहिए, क्योंकि अविश्वासी लोग इन बातों को नहीं समझ सकते।

एक अद्‌भुत सच्चाई जिस पर मैं यीशु मसीह को लेकर विश्वास करता और दृढ़ता के साथ मानता हूँ वह यह है कि परमेश्वर पिता ने मुझे यीशु के हाथों में सौंपा है। संसार के सारे विश्वासी इस बात के लिए सुनिश्चित हो सकत हैं कि वे अपने चरवाहे और अपने झुण्डा का हिस्सा हैं(यूहन्ना 10:27-29)।

10:30-33

खोज 2. तथ्य कि यीशु मसीह ही परमेश्वर है।

(1) यीशु मसीह ने दावा किया कि वह और परमेश्वर पिता एक हैं।

यूहन्ना 10:30 में, यीशु कहते हैं,"मैं और पिता एक ही है"। यीशु मसीह केवल इस सत्य की ओर संकेत नहीं कर रहे थे वे शारीरिक तौर पर एक है वरन वह कह रहे थे कि वे एक ही काम को करते हैं। उसने निश्चय ही उनकी सिद्ध एकता का हवाला दिया: अर्थात भीतरी,आत्मिक, सात्विक, त्रीएक एकता का हवाला दिया। वह जब भी कहता है कि "हम", वहां पर वह सदैव दो लोगों (एक ईश्वरीय स्वभाव में भीतरी अन्तर) (मत्ती 28:19, एक ईश्वरीय नाम या स्वभाव जिसके भीतर तीन भिन्न व्यक्तित्व पाये जाते हैं) की बात करता है। और जब वह "एक" कहता है तो वह किसी एक वस्तु या जीव के बारे में बोलता है। इसे ही त्रीएकता कहा जाता है।

यह आयत अति महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह दो गलत शिक्षाओं का खण्डन करती है:

- यह परमेश्वर में एकता के विचार के इनकार का खण्डन करती है
- यह परमेश्वर में विविधता होने का खण्डन करती है।

(2) यहूदी लोग यीशु के दावे को समझे: यह अपने आप को परमेश्वर कहता है।

पहले यीशु ने परमेश्वर के समान होने का दावा किया था। यूहन्ना 5:17-18 और 23 में यीशु ने दावा किया था कि वह कार्यों और आदर में परमेश्वर पिता के समान है। यूहन्ना 8:58-59 में यीशु ने दावा किया कि वह अब्राहम से पहले से विद्यमान है। यहूदियों ने इसे ईश निन्दा समझा, क्योंकि उन्होंने तुरन्त उस पर पत्थरवाह करने के लिए पत्थर उठा लिये।

अत: यूहन्ना 8:24 में, यीशु ने यहूदियों को चेतावनी दी, "यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूँ(जिसके लिए मैं कहता हूँ कि मैं वही हूँ)(यह परमेश्वर का वही नाम है जो पुराने नियम के निर्गमन 3:14 में पाया जाता है), तो तुम अपने पापों में मरोगे। यह विश्वास करना काफी नहीं है कि यीशु मसीह एक भला व्यक्ति या कोई नबी था। नहीं ! जब तक कि लोग(जिसमें गैर यहूदी लोग भी शामिल हैं) यह विश्वास नहीं कर लेते कि जो कुछ यीशु ने अपने बारे में(बाइबल में) होने का दावा किया वह सत्य है, वे निश्चय तौर पर अपने पापों में मरेगें। अर्थात वे निश्चय तौर पर स्वर्गलोक में प्रवेश नहीं कर पाएंगे वरन नरक के भागी होगें! इसलिए यह मानना आवश्यक है कि यीशु मसीह के समान और परमेश्वर पिता के साथ एक है।

कदम 3. प्रश्न. **व्याख्या**

ध्यान दें: आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधार पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये यूहन्ना 10:1-42 में पायी जाने वाली सच्चाईयों का समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करे।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिये गये हैं।)

10:1-16

प्रश्न 1. अच्छे चरवाहें के प्रारूप का क्या अर्थ है?

ध्यान दें। यूहन्ना रचित सुसमाचार में, अच्छा चरवाहा(यूहन्ना 10) और दाखलता और डालियां(यूहन्ना 15) दो प्रारूप या रूपक हैं?

"प्रारूप" किसी पदार्थ या व्यक्तिविशेष का किसी समान विशेषताओं वाली वस्तु से तुलनात्मक चित्रण होता है।

(1) इस्राएल में चरवाहों का जीवन।

इस्राएल में हर एक जन एक चरवाहे के बारे में जानता था। एक गांव में एक बड़ा भेड़शाला हुआ करता था जिसमें भेड़ों के बहुत से झुण्डों को रात के समय में रखा जाता था। रात के समय में एक चौकीदार उनकी रखवाली करता था। सुबह के समय, चरवाहा अपने झुण्ड को चराने और पानी पिलाने के लिए आता है। चौकीदार सभी चरवाहों को जानता है और उनके लिए द्वार खोल देता है। हर एक झुण्ड की भेड़ें अपने अपने चरवाहे की आवाज़ को जानती हैं और वे किसी दूसरे पीछे नहीं जातीं। लेकिन चरवाहा भी अपनी भेड़ों को उनके नामों से पहिचानता है। चरवाहा अपनी भेड़ों से प्रेम करता है इसलिए वह भेड़ियों वरन राजा दाऊद के समान वह सिंह और भालू से भी भेड़ों की सुरक्षा करता है।

(2) यूहन्ना 10:1-16 की कहानी एक प्रारूप है।

रूपक एक अंतर्निहित तुलना है। उदारहण के लिए, "यहोवा मेरा चरवाहा है"(भजन 23:1)एक रूपक है। ऐसा अंतर्निहित किया गया है कि परमेश्वर एक चरवाहे के समान है।

प्रारूप, रूपक का ही विस्तृत रूप है। उदारहण के लिए, यीशु की तुलना अच्छे चरवाहे के अनेकों लक्षणों से की जा सकती है। लेकिन, प्रारूप का इस्तेमाल करते समय हमें प्रतीक की सारी विशेषताओं की व्याख्या नहीं करनी चाहिए।

यूहन्ना 10 में, यीशु ने स्वयं प्रारूप के रूप में इस्तेमाल किये गये कई प्रतीकों की व्याख्या की। उदाहरण के लिए, चरवाहा खुद यीशु को दर्शाता है। दरवाजा भी खुद यीशु मसीह ही है। भेड़भाला इस्राएल को प्रगट करती है(यूहन्ना 10:16)।भेड़े न तो इस्राएल में रहने वालें लोग हैं और न ही सारे संसार में पाये जाने। भेड़ें केवल वहीं लोग हैं जिनके लिए यीशु मरा; जिन्हें उद्धार पाने के लिए पहले से ही निर्धारित कर दिया गया है; जिन्होंने अनन्त जीवन पाया है; जो यीशु मसीह की आवाज़ को सुनते हैं; और जो यीशु मसीह का अनुसरण करते हैं। एक "झुण्ड" कलीसिया को दर्शाता है जिसमें संसार भर में पाये जाने वाले विश्वासी समावेशित हैं (यूहन्ना 10:16)।

उदाहरण के लिए कुछ चिन्ह या प्रतीक, चोर,डाकू,परदेशी, मज़दूर हैं जिनका इस्तेमाल ऐतिहासिक घटनाओं का अर्थ बताने के लिए किया जा सकता है। दूसरे प्रतीक जैसे चौकीदार और भेड़िये, का मतलब नहीं बताया जाना चाहिए, क्योंकि न तो यीशु ने बताया और न ही सन्दर्भ की उसका अर्थ बताता है। लेकिन उस पद या खण्ड के मुख्य विचार को आत्मसात कर लेना चाहिए।

(3) कहानी का निचोड़ ।

यूहन्ना 10 में, मुख्य विषय अच्छा चरवाहा, यीशु है, जिसकी तुलना बुरे चरवाहों अर्थात यहूदियों में पाये जाने वाले फरीसियों और सदूकियों से की गयी है।

यीशु सच्चा और सिद्ध चरवाहा है। उसने इस्राएल की भेड़शाला में ठीक उसी तरीके से प्रवेश किया जिस तरीके की चर्चा पुराने नियम में की गयी थी: अर्थात यहूदा के गोत्र से; दाऊद के घराने से; उसकी मां कुँवारी थी; और उसका जन्म बेतलेहम में हुआ था। वह हर एक सच्चे विश्वासी को नाम से जानता है। इससे भी बड़ी बात यह है कि विश्वासी जानते हैं कि यीशु सच्चा चरवाहा है और वे केवल उसका ही अनुसरण करेगें। यीशु ने अपनी भेड़ों की अगुवाई प्रेम के साथ व उनके लिए एक आदर्श बनकर की। यहूदी धार्मिक अगुवे व शिक्षक चोर और डाकुओं के समान थे। उन्होंने मुख्य द्वार अर्थात यीशु मसीह को नज़रअन्दाज़ किया और वे मनुष्यों द्वारा बनाये गये नियम व कानूनों के द्वारा डरा धमका कर लोगों को नियन्त्रित करना चाहते थे। उन्होंने इस्राएल के लोगों की अगुवाई (एक चरवाहे के रूप में) नहीं की,वरन उन्हें डरा धमका कर(मज़दूर के समान) हांका। सच्चा विश्वासी उनके पास से भाग जाएगा।

यीशु ने एक अच्छे व सच्चे चरवाहे के समान विश्वासियों के लिए क्रूस पर अपनी जान दे दी। लेकिन फरीसियों और सदूकियों ने उनके आत्मिक जीवन को नाश कर दिया।

यीशु इस भेड़शाला का चरवाहा है, जिसमें इस्राएल के विश्वासी और संसार के अन्य देशों में रहने वाले विश्वासी आते हैं। वह हर एक राष्ट्र(गोत्र,भाषा, और लोगों) में से, उनके मूल राष्ट्रीय भेड़शालों में से लेकर एक अन्तर्राष्ट्रीय झुण्ड तैयार करता है(यूहन्ना 10:16)। यहूदी राष्ट्र और गैर यहूदी राष्ट्रों के विश्वासी(मसीही लोग)मिलकर मसीह का देह (विश्वव्यापी कलीसिया), एक राज्य का निर्माण करते हैं।

(4) इस कहानी से मिलने वाली शिक्षाएं।

यह प्रारूप हमें बताता है कि द्वार के माध्यम से,अर्थात यीशु मसीह के द्वारा विश्वासियों कें समाज में प्रवेश करना कितना महत्वपूर्ण है। यीशु मसीह को व्यक्तिगत व घनिष्ट रूप में जानना कितना महत्वपूर्ण है। यीशु मसीह का अनुसरण करना और उसकी आज्ञाओं को मानना कितना महत्वपूर्ण है। जब हम ध्यान से उसका अनुसरण करेगें केवल तब ही वह हमें उन लोगो से बचाएगा जो हमें नियन्त्रित करना और हमें नाश करना चाहते हैं। प्रारूप हमें यह भी सिखाते हैं कि संसार में बहुत सी भेड़शालाएं (भिन्न संस्कृतियों के साथ में राष्ट्र)हैं, परन्तु सारे संसार भर में विश्वासियों का केवल एक ही झुण्ड है, मसीह की कलीसिया या मसीह के राज्य के नाम से जाना जाता है। बाइबल अनेकों डिनोमिनेश के विचार का खण्डन करती है (1कुरिन्थियों 3:3-4)।

10:7,10

प्रश्न 2. यीशु मसीह की तुलना एक द्वार और एक चरवाहे से क्यों की गयी?

ध्यान दें। "द्वार" को यीशु मसीह के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल केवल यीशु के "अच्छे चरवाहे" के प्रतीक की व्याख्यार करना है। जब यीशु पद 7 में कहते हैं कि "मैं भेड़ों के लिए द्वार हूँ" तो वह यह बताता है कि वह ही केवल वह द्वार है जिसके द्वारा लोग कानूनी तौर पर उसके समाज अर्थात कलीसिया में प्रवेश कर सकते हैं। मसीह की कलीसिया या मसीह के राज्य में प्रवेश करने के लिए और कोई दूसरा विकल्प है की नहीं(यूहन्ना 14:6)।

यीशु मसीह एक ही समय में भेड़ों तक जाने के लिए और भेड़ों के जाने के लिए द्वार दोनो है। यीशु ने पद 8 में दावा किया कि वह सच्चे चरवाहों के लिए(कलीसिया के अगुवों व पासबानों के लिए) भेड़ों तक पहुंचने का एक मात्र वैध द्वार है। जितने भी लोगों ने बिना उसके द्वारा भेड़शाला में जाने का प्रयास किया है वे सारे चोर और डाकू हैं। यह बात मसीहियों और संसार के अन्य गैर मसीही धर्मों में पाये जाने वाले झूठे भविष्यद्वक्ताओं को लेकर भी ठीक है। यीशु ने पद 9 में दावा किया कि भेड़ों के लिए भी वही एकमात्र द्वार है जिसके द्वारा उन्हें उद्धार और चराई प्राप्त होती है।

10:9-10

प्रश्न 3. जब यीशु ने यह कहा कि जो उसके द्वारा प्रवेश करेगा उद्धार पाएगा, तो उसका क्या मतलब था?

ध्यान दें। यूहन्ना 3:16-17 में "उद्धार पाने का अर्थ" अनन्त जीवन पाना है। यूहन्ना 10: 28 में यीशु मसीह की भेड़ अनन्त जीवन पाती है(अर्थात यीशु मसीह को व्यक्तिगत,घनिष्ठता और सही मायनों में जानने और उसके साथ संगति करने की योग्यता)(यूहन्ना 17:3) वे कभी नाश नहीं होगें और कोई भी उन्हें मसीह के हाथों से छीन नहीं सकता। अत: यूहन्ना 10:9 को अर्थ यह नहीं हो सकता कि जो कोई यीशु मसीह के द्वारा प्रवेश करेगा वह केवल उद्धार पाएगा। इस मलबल इससे कहीं अधिक है। सबसे पहले वे अपने दोषों, लज्जा, गुलाम बनाने वाले शक्तियों और पाप के प्रदूषण और पाप के उन पर होने वाले अनन्त दण्डाज्ञा से मुक्ति पाएंगे। वे अनन्त जीवन प्राप्त करेगें। और फिर वे अपने चरवाहे अर्थात यीशु मसीह की उपस्थिति में सुरक्षित वास करेगें। दुनिया की कोई भी शक्ति उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुंचा पाएगी। वे अपने चरवाहे की सुरक्षा और देखरेख का प्रतिदिन आनन्द उठाएंगे। उसकी चराई में उन्हें भरपूर आशीष प्राप्त होगी।

10:11

प्रश्न 4. क्या यीशु सबके लिए मरा या फिर केवल अपनी ही भेड़ों के लिए?

ध्यान दें। यूहन्ना 10:11 में लिखा है, मैं अच्छा चरवाहा हूँ। अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए अपने प्राण देता है"। वहां पर ऐसा नहीं लिखा है कि अच्छा चरवाहा सारी भेड़ों के लिए अपनी जान देता है।

तो वे "भेड़े" कौन हैं जिनके लिए उसने प्राण दिये? यूहन्ना 10:27-28 में लिखा है कि वे वह लोग हैं जो उसकी बातों को सुनते और उनका पालन करते हैं। वे वह लोग हैं जो अनन्त जीवन पाते हैं और वे कभी नाश नहीं होगें। ये वे लोग हैं जिन्हें कोई शक्ति मसीह के हाथों से छीन नहीं सकता(ध्यान दें: नामधारी मसीहियों को छीना और नाश किया जा सकता है,क्योंकि वे कभी यीशु मसीह की भेड़ें थे ही नहीं! अत: यीशु मसीह की प्रायश्चित के रूप में हुई मृत्यु धरती पर अभी तक जीवन व्यतीत करने वाली सम्पूर्ण मानवजाति के लिए पर्याप्त है(यूहन्ना 3:17, लेकिन केवल उन्हीं लोगों के जीवन में प्रभावशाली है जो उसकी भेड़ें हैं(यूहन्ना 3:16,18)! इसीलिए यीशु ने कहा कि वह अपनी भेड़ों के लिए प्राण देता है। यीशु मसीह द्वारा उद्धार के निमित्त किया गया परमेश्वर का काम किसी मनुष्य के निर्णय या प्रयास से व्यर्थ नहीं ठहर सकता। उसकी योजना सदा सर्वश्रेष्ठ, अप्रतिरोध्य और प्रभावशाली होती है(मरकुस 10:45; रोमियों 8:29-30;9:6-18;1थिस्लुनिकियों 2:13-15)।

निष्कर्ष: हालांकि प्रायश्चित के रूप में हुई मसीह की मृत्यु धरती पर अभी तक जीवन व्यतीत करने वाली सम्पूर्ण मानवजाति के लिए पर्याप्त है, लेकिन उसकी मृत्यु केवल उनके लिए प्रभावशाली है जिन्होंने उद्धार पाया है। जबकि सुसमाचार सारे जीवित लोगों में प्रचार किया जाना चाहिए, केवल उन्हें नहीं जो मसीह में विश्वास के साथ प्रतिउत्तर देते हैं। जबकि परमेश्वर पूरे संसार से लोगों को अपने आप खींच लेते हैं(यूहन्ना 6:44;12:32) लेकिन फिर भी सारे लोग मसीह के पास नहीं आते(यूहन्ना 1:11;6:37) इस कारण संसार के सारे लोगों का उद्धार नहीं हो पाता। बाइबल किसी व्यापक सुसमाचार के बारे में शिक्षा प्रदान नहीं करती,क्योंकि तीतुस 2:11 को इस तरह से अनुवाद नहीं किया जा सकता: "सब मनुष्यों के उद्धार के कारण परमेश्वर का अनुग्रह प्रगट हुआ है", लेकिन "क्योंकि परमेश्वर का वह अनुग्रह प्रगट हुआ है जो सब मनुष्यों के उद्धार का कारण है।"

10:16

प्रश्न 5. जब यीशु ने कहा कि मेरी और भी भेड़ें हैं, जो इस भेड़शाला की नहीं और मुझे उन्हें भी इस झुण्ड में लाना अवश्य है तो उसका क्या अभिप्राय था?

ध्यान दें।

(1) यीशु ने इस्राएल तथा संसार के अन्य देशों में से अपनी भेड़ों को अपनी कलीसिया या अपने राज्य में इकट्ठा किया।

पूरी कहानी और विशेष करके 16 पद से यह तो बिल्कुल स्पष्ट हो गया है कि "भेड़शाला" इस्राएल देश को प्रगट करती है। यीशु उनकी भेड़शाला से(इस्राएल देश में से)अपनी भेड़ों को (यीशु पर विश्वास करने वाले यहूदियों को)अपनी कलीसिया या अपने राज्य में इकट्ठा कर रहा है। पुराने नियम के समय में परमेश्वर ने अन्यजातियों को उनकी इच्छा के अनुसार जीवन बिताने की छूट दी थी(प्रेरितों 14:16)। लेकिन यीशु मसीह की ज़मीनी सेवाकाई के प्रथम चरण में यीशु ने इस्राएल देश पर अपना ध्यान केन्द्रित किया(मत्ती 10:5-6)। लेकिन बाद में यीशु ने भी इस बात को स्पष्ट कर दिया कि वह अन्य देशों में से भी अपने लिए भेड़ें इकट्ठा करने के लिए आया है। उन्हें उन भेड़शालाओं में से(दूसरे देशों व दूसरी संस्कृतियों में से) भी भेड़ों को अपने एक झुण्ड में लेकर आना है(यूहन्ना 10:16)।

(2) संसार भर के अन्य देशों में से विश्वासी यहूदियों के समान योग्यता के आधार पर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेगें।

पुराने नियम में यह भविष्यद्वाणियां की गयीं कि परमेश्वर अपने उद्धार के कार्य को संसार के सारे देशों के लिए विस्तृत करेगा। उत्पत्ति 12:3, में परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की कि वह मसीह में होकर संसार के सारी जातियों को आशीष देगा। योएल 2:28 में वह प्रतिज्ञा करता है कि वह सारी जातियों के लोगों पर अपनी आत्मा उण्डेलेगा। मलाकी 1:11में वह कहता है कि अन्याजियों बीच में मेरा नाम महान ठहरेगा।

लेकिन पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं को दृष्टिकोण यह था कि दूसरे देशों से गैर यहूदी लोग इस्राएल देश से जुड़ने के कारण उद्धार पाएगे(यशायाह 2:2-4;54:2-3;62:10-12;जकर्याह 8:23)!

निम्नलिखित तीन शिक्षाएं फिर भी पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं के लिये रहस्य बनी रही,जिसका भेद उन्हें पता नहीं चल पाया:

- वह शिक्षा थी कि भविष्य में परमेश्वर के उद्धार के काम के लिए केवल इस्राएल में ही ध्यान केन्द्रित नहीं किया जाएगा,वरन उसका विस्तार अन्यजातियों तक के लिए किया जाएगा(मत्ती 24:14; मत्ती 28:19)।
- शिक्षा कि परमेश्वर के लोगों में अब केवल इस्राएल में पाये जाने वाले विश्वासी ही शामिल नहीं थे, संपूर्ण संसार के लोग शामिल थे। परमेश्वर के लोग अब मसीह की कलीसिया या परमेश्वर के राज्य के नाम से जानी जाती है (1पतरस 2:9-10)।
- शिक्षा की इस्राएल देश में पाये जाने वाले यहूदी विश्वासियों के समान योग्यता व विश्वास के आधार पर अन्यजातियां परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करेगी।(इफिसियों 3:1-6)।

यीशु मसीह ने केवल नये नियम में ही इस भेद को अपने प्रेरितों पर प्रगट किया। इफिसियों 1:9-10 में हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने प्रगट किया कि वह स्वर्ग और पृथ्वी की सारी चीजों और सारी शक्तियों को एक सत्ता के अर्थात मसीह के अधीन करने जा रहे हैं। इफिसियों 3:1-6 में, हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर ने नये नियम के प्रेरितों पर कुछ ऐसी बातों को प्रगट किया की जिन्हें पुराने नियम के भविष्यद्वक्ता नहीं जानते थे। सुसमाचार के सुनाये जाने से परमेश्वर सारी जातियों को बनाने जा रहा है:

- पुराने नियम में परमेश्वर के लोग कहलाये जाने वाले इस्राएल के साथ वारिस बनाने जा रहा है।
- एक ही देह(मसीह की देह) का अंग बनाने जा रहा है
- मसीह में होकर प्रतिज्ञाओं में सहभागी होगें।

परमेश्वर ने पुराने नियम में पाये जाने वाले अपने लोगों(इस्राएल में रहने वाले विश्वासियों को) को न तो खत्म किया और न ही उन्हें नये नियम की कलीसिया के साथ प्रतिस्थापित किया, वरन उससे भी उच्च स्तरीय व विस्तृत योजना बनाकर(जो उद्धार के निमित्त यीश मसीह के कार्यो और व्यवस्थाओं व भविष्यवाणियों के पूरे होने पर आधारित थी) सारे संसार की जातियों में से विश्वासियों को अपनी योजना में शामिल कर लिया।

ध्यान दें, यूहन्ना 10:16 का अनुवाद "मेरी और भेड़े हैं जो इस भेड़शाला की (ग्रीक:ek) : नहीं। मुझे उनको भी लाना(ग्रीक: ऐगो) अवश्य है। वे मेरा शब्द सुनेंगी, तब एक ही झुण्ड और एक ही चरवाहा(ग्रीक : मिया पोईमी,हीज पोईमी) होगा। यीशु ने यह नहीं कहा कि वह अन्य देशों की भेड़ों इस्राएल की भेड़शाला में लेकर आएगा। वरन वह कहता है कि वह उसकी भेड़ों को उनके प्राकृतिक भेड़शालाओं से निकालकर खुद अपने "झुण्ड" अर्थात कलीसिया या राज्य में शामिल करेगा। प्राकृतिक या भौतिक इस्राएल देश या अन्यजातियों को अब कोई महत्व नहीं है। अब केवल परमेश्वर का राज्य महत्वपूर्ण है(मत्ती 8:11-12;21:42-44)!

स्वभाविक जैतून के पेड़ की डालियां(इस्राएल के विश्वासी) में विश्वास के साथ जंगली जैतून की डालियां (अन्यजातियों में से विश्वासी)जड़(यीशु मसीह और उसकी नयी वाचा के भागी लोगों में) में जुड़ जाती हैं (रोमियों 11:16-24)

10:29

प्रश्न 6. 29 आयत का सही अनुवाद क्या है?

ध्यान दें.पद 29 ने मूल भाषा में "उन्हें" शब्द का इस्तेमाल नहीं किया गया है। यहां पर इस्तेमाल किया गया शब्द "सब से बड़ा है" पिता की बजाय भेड़ों के झुण्ड की ओर इशारा करता है। सर्वप्रथम हस्तलिपि जो मूल भाषा में लिखी गयी थी ठीक

थी क्योंकि उसमें कुछ इस तरह से अनुवाद किया गया था, "जो (झुण्ड) मेरे पिता ने मुझे दिया है वह सबसे बड़ा है(अधिक श्रेष्ठ)(जगत में पाये जाने वाले सारे प्राणियों की तुलना में),और कोई(उन्हें,अर्थात झुण्ड को)पिता के हाथ से छीनने के योग्य नहीं है।" जो परमेश्वर पिता ने यीशु को दिया है वह एक झुण्ड है जो हर देश व जाति में से लिये गये विश्वासियों का झुण्ड है। ये विश्वासी जन जगत में पायी जाने वाले प्राणियों में सबसे उत्तम सृष्टि है। ये विश्वासी मिलकर एक झुण्ड को बनाते हैं,अर्थात सारे संसार के लिए एक सार्वभौमिक कलीसिया, संसार में एक परमेश्वर का राज्य।

कदम 4. **अनुप्रयोग**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में वे कौन सी ऐसे प्रकाशन हैं जिन्हें मसीही जन सम्भवत: अपने जीवन में उपयोग कर सकते हैं?

साझा करें व लिखें। आईये हम आपस में सोचविचार करके यूहन्ना 10:1-42 में दिये गये सम्भव अनुप्रयोगों की एक सूची तैयार करें।

ध्यान दें। किस सम्भव अनुप्रयोग को परमेश्वर चाहता है कि आप उसे अपने जीवन में व्यक्तिगत रीति बना लें?

लिखें। इस व्यक्तिगत रीति या अनुप्रयोग को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। बिना किसी झिझक के अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोगों को आपस में साझा करें।

(याद रखें कि हर एक समूह में लोग अलग अनुप्रयोगों को अपने व्यक्तिगत जीवन में रीति के रूप में स्थान देगें या फिर समान अनुप्रयोग या सच्चाई को अपने जीवन में अलग तरीके से इस्तेमाल करेंगें।नीचे दी गयी सूची सम्भव अनुप्रयोगों की सूची है।)

1. यूहन्ना 10:1-42 में पाये जाने वाले सम्भावित अनुप्रयोगों के उदाहरण।

10: 1 उन चोर और डाकुओं से सावधान रहो जो आपकी मण्डली में बाइबल से अलग रास्तों के द्वारा प्रवेश करते हैं।

10:3. प्रभु यीशु मसीह को इतनी नज़दीकी से पहिचाने कि आप उसकी आवाज़ को पहिचान सकें और इस कारण उसकी आवाज़ और चोर और डाकुओं की आवाज़ में फरक को महसूस कर सकें।

10:9-10.यदि आपने अभी तक द्वार अर्थात यीशु के द्वारा प्रवेश नहीं किया है, तो आप प्रवेश करें और आप उद्धार पाएंगे,आप इस धरती पर सुरक्षित रहेगें और कोई भी चीज़ आपको नुकसान नहीं पहुंचा सकेगी, जिससे आपका जीवन सार्थक व सन्तोषजनक होगा।

10:12 मज़दूर चरवाहे या किराये के पास्टर के पहिचानें। ये धार्मिक अगुवे और शिक्षक वास्तव में भेड़ों की देखभाल नहीं करते हैं और वे कभी अपने भेड़ों के लिए अपनी जान को नहीं देंगें।

10:16. अपनी मण्डली को प्रारम्भ से ही शिष्टमण्डल(बाहर निकलकर कार्यों को अन्ज़ाम देने वाला) बनाने का प्रयास कीजिए! प्रमुख चरवाहा, प्रभु यीशु मसीह, चाहता है कि संसार के सभी देशों, जातियों और भाषाओं के लोग उद्धार पाएं।

10:27. यदि आप वास्तव में सच्ची भेड़ हैं,तो आप यीशु की बातों को सुनेंगे और उसी के कहे अनुसार चलेंगे।

10:28. कभी भी चरवाहे, यीशु मसीह पर सन्देह न करें, कि उसने आप से यह प्रतिज्ञा की है कि उसने आपको अनन्त जीवन दिया है, कि आप नाश न होगें और कोई आपको उसके हाथ से छीन नहीं सकता है।

10:29 कभी भी चरवाहे, यीशु मसीह पर सन्देह न करें, कि उसने आप से यह प्रतिज्ञा की है कि जो झुण्ड पिता ने मुझे दिया है वह सबसे बड़ा है(अधिक श्रेष्ठ)(जगत में पाये जाने वाले सारे प्राणियों की तुलना में),और कोई(उन्हें,अर्थात झुण्ड को)पिता के हाथ से छीनने के योग्य नहीं है।

10:30-39. कभी भी सन्देह न करें कि यीशु ने दावा किया था कि वह और पिता दोनों एक ईश्वरीय शक्ति हैं, कि वह ही परमेश्वर है जिसने मनुष्य का रूप धारण किया है; और पिता परमेश्वर परमेश्वर पुत्र में और परमेश्वर पुत्र परमेश्वर पिता में समाया हुआ है। यहूदी स्पष्ट तौर पर इसका अर्थ समझ गये थे; नहीं तो उन्होंने यीशु पर कभी ईश निन्दा करने का आरोप नहीं लगाया होता और न ही उसको पत्थरवाह करके मारने की कोशिश की होती।

2. यूहन्ना 10:1-42 में से व्यक्तिगत अनुप्रयोग का उदहारण।

मैं यूहन्ना 10:28 याद करना चाहता हूँ ताकि मैं कभी इस बात को न भूलूँ की यीशु ने मेरे और उस पर विश्वास करने वाले सारे लोगों के लिए उद्धार के निश्चय की प्रतिज्ञा की है। यीशु ने प्रतिज्ञा की है कि "मैं उन्हें अनन्त जीवन देता हूँ। वे कभी नष्ट न होंगी, और कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।"

मैं अपने मन को इस सच्चाई के प्रति समर्पित करना चाहता हूँ कि यीशु मसीह और परमेश्वर अपनी सत्ता में, अपने कामों में और आदर में एक समान है। क्योंकि परमेश्वर मनुष्यों की सोच से भी कहीं अधिक बढ़कर है इसलिए कोई भी जन परमेश्वर के स्वभाव को पूरी तरह से परिभाषित नहीं कर सकता। मनुष्य केवल उन बातों पर विश्वास करने के अलावा जो परमेश्वर ने बाइबल में खुद अपने बारे में प्रगट की हैं कुछ नहीं कर सकता। परमेश्वर ने यह प्रगट किया है कि वह वास्तव में एक है जिसे तीन भिन्न व्यक्तित्वों में होकर जाना जा सकता है, अर्थात परमेश्वर पिता, परमेश्वर पुत्र, और परमेश्वर पवित्र आत्मा। मैं इस पर विश्वास करता हूँ और हर जगह पर उसकी चर्चा करूंगा।

कदम 5. प्रार्थना . **प्रतिउत्तर**

आइये यूहन्ना 10:1-42में से परमेश्वर ने हमें जो भी एक सत्य सिखाया है उसके बारे में परमेश्वर से प्रार्थना करें। (बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दे। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना** (8 मिनट)	***[मध्यस्थता]*** **दूसरों के लिए प्रार्थना करें**

दो या तीन लोगों के समूह में **लगातार प्रार्थना करें।** एक दूसरे के साथ मिलकर एक दूसरे तथा संसार के लोगों के लिए प्रार्थना करें। (रोमियों 15:30; कुलु 4:12)

6	**तैयारी** (2 मिनट)	**[निर्धारित कार्य]** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह को अगुवे.*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में यह तैयार सामग्री प्रदान करें। या उन्हें इसकी पेपर पर नकल करने को कहें।)

1. **समर्पण :** चेले बनाने तथा मसीह की कलीसिया की स्थापना करने के प्रति समर्पित हों

2. "यूहन्ना अध्याय 10" पर -किसी दूसरे व्यक्ति या समूह को -प्रचार करें, शिक्षा दें या बाइबल अध्ययन पर ध्यान लगाएं।

3. **परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। लूका 1:1-4:30** में से आधे अध्याय पर प्रतिदिन एकान्त में मनन करें। पसन्द आने वाले विचार को लिखने के तरीके का इस्तेमाल करें। नोट्स बनाएं।

4. **याद करें। (श्रृंखला छ) से** नयी आयतों को याद करें व दोहराएं। **(1) छोड़ें व नष्ट कर दें: उत्पत्ति 2:24।** रोज 5 याद करी हुई आयतों को दोहराएं।

5. **प्रार्थना।** इस सप्ताह किसी विशेष व्यक्ति या परिस्थिति के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन 5:3)।

6. मसीह की कलीसिया बनाने के सम्बन्ध में अपने लेखे का अद्यपन करें । जिसमें आराधना, शिक्षा सामग्री तथा इस तैयारी की सामग्री को शामिल करें।